उपयोग

उत्तराखण्ड में रिंगाल जीवन का भिन्न अंग होने के साथ–साथ यहॉ की हस्तशिल्प को भी प्रदर्शित करता है यह यहॉ की आजीविका का साधन भी रहा है। रिंगाल प्लास्टिक से काफी मजबूत एवं टिकाउ होता है, तथा प्लास्टिक से होने वाली हानियों से मुक्त हैं। रिंगाल पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के अलावा भूस्खलन को रोकने में भी सहायक है। रिंगाल की जडें गोल चक्र जैंसी होती है जो जमीन को जकड देती है। रिंगाल के तने इस कदर लचीले होते है जब पानी आता है तो यह झुक जाते हैं व पानी का वेग कम होने पर तन जाते हैं और जड अपनी पकड बनाये रखती हैं, जिसके कारण रिंगाल भूमि के कटाव को रोकता है। रिंगाल से बनने वाली वस्तुओं का उपयोग उत्तराखण्ड राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में बहुतायत में होता है।

रिंगाल से बनने वाले प्रमुख उत्पाद

- टोकरी , डलिया
- कंडी, बडी कंडी
- चटाई
- सुपा या सुपु
- सोल्टा

परियोजना का उददेश्य

- रिंगाल के राईजोम बैंक की स्थापना करना।
- रिंगाल के प्रति जनमानस में जागरूकता पैदा करना।

रिंगाल

टंगसा पौधालय,वन अनुसंधान रेंज गोपेश्वर (चमोली)

वन वर्धनिक उत्तराखण्ड,नैनीताल

Silviculturist, Hill Region, Uttarakhand Nainital

(Fairyhall, Tallital, Nainital) 236002

Phone / Fax: (05942)- 236270

e- mail:silvahill_uta@hotmail.com

परिचय (Introduction)

रिंगाल गढवाल एवं कुमाऊँ हिमालय के समशीतोष्ण क्षेत्रों में पाया जाने वाली एक व्यापक रूप से वितरित झाडी प्रजाति है। यह विशेषकर 1800 से 2400 मीटर की ऊँचाई पर पायी जाती है। रिंगाल पॉएसी (Poaceae) कुल का पौधा है, जिसकी पूरे भारत में 136 प्रजातियॉ पायी जाती है। उत्तराखण्ड राज्य में हिमालयी क्षेत्रों में मुख्यतः चार प्रकार के रिंगाल की प्रजाति पायी जाती है, इनके पहाडी नाम है – गोल रिंगाल *Drepanostachyum falcatum* ,देव रिंगाल *Thamnocalamus falconeri* ,थाम रिंगाल *Thamnocalamus spathiflorus* व सरूर रिंगाल *Sinarundinaria anceps* । यह उत्तराखण्ड के जंगलों में पाये जाने वाली झाडी प्रजाति है, जो कि बॉस की प्रजाति का होता है, इसलिए इसे बौंना बॉस (Dwarf bamboo) भी कहा जाता है। जहॉ बॉस की लम्बाई 25 से 30 मीटर होती है वहीं रिंगाल 5 से 8 मीटर लम्बा होता है। उत्तराखण्ड राज्य में रिंगाल मुख्यतः – पिथौरागढ, बागेश्वर, चमोली, टिहरी एवं उत्तरकाशी जिलों में पाया जाता है।

जाति – थम्नोकोलामस फाल्कॉनरी

स्थानीय नाम – देव रिंगाल

ऊँचाई – 1900 . 2750 मीटर

उपयोग – टोकरी, डलिया,कंडी, ट्रे, पंखे, एवं छाते आदि कार्य में।

जाति – ड्रैपनोस्टैचियम फाल्केटम

स्थानीय नाम – गोल रिंगाल

ऊँचाई – 1500 . 2100 मीटर

उपयोग – टोकरी, मैट, सोल्टा, फिसिंग रॉड एवं चारा आदि कार्य में।

जाति– थम्नोकेलामस स्पैथिफ्लोरस

स्थानीय नाम– थाम रिंगाल

ऊँचाई– 2500 . 3500 मीटर

उपयोग– कृषि यंत्र, हुके के पाइप आदि कार्य में।

जाति– सिनरूंडिनारिया एंसीप्स

स्थानीय नाम–जुमरा/सरूर रिंगाल

ऊँचाई– 2100 . 2700 मीटर

उपयोग– कृषि यंत्र आदि कार्य में।